

एमआईटी यूनिवर्सिटी, पुणे में विद्यार्थियों से नेतृत्व, सुशासन, लोकतंत्र एवं शांति विषय पर

संवाद कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

आज मुझे सरस्वती के मंदिर में आने का मौका मिला, जिसने विश्व शांति का अलख जगाया। जिस विश्वविद्यालय ने एक नई सोच दी, एक नया चिंतन दिया, एक नया विचार दिया। विशेष रूप से इस विश्वविद्यालय के संस्थापक संरक्षक, जो एक विद्वान हैं और उनको आध्यात्मिक ज्ञान का एक लंबा अनुभव है। एक किसान पुत्र के रूप में उन्होंने एक छोटा सा नन्हा पौधा टेक्नीकल एजुकेशन का लगाया। अपने चिंतन और सोच के आधार पर ही उन्होंने इस विश्वविद्यालय का संचालन किया। मैं उनको साधुवाद देता हूँ कि आप जैसे महानुभावों के कारण हमारी बौद्धिक क्षमता, हमारे नौजवानों के नये अन्वेषण, एक नई सोच और एक नये चिंतन से हम विश्व गुरु बनेंगे और सभी के सपने पूरे होंगे।

इस विश्वविद्यालय के कैम्पस से विद्यार्थी जो कुछ भी ज्ञान और अनुभव अर्जित करेंगे, उसके आधार पर भारत के नवनिर्माण में विकसित भारत बनाने में अपना योगदान देंगे। पुणे की धरती की एक बड़ी विरासत है। यह सांस्कृतिक और स्वतंत्रता सेनानियों की नगरी है। यह भूमि छत्रपति शिवाजी महाराज की जन्मस्थली है। यह भूमि स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की है, जिन्होंने कहा था कि स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे। जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में एक नया अलख जगाया।

महात्मा फुले जी का महिला शिक्षा के अंदर देश में इनका विशेष रूप से बहुत बड़ा योगदान है। ज्योतिबा फुले जैसे अन्य भी समाज सुधारक हैं, गोपाल कृष्ण गोखले जैसे महान समाज सुधारकों की यह धरती है। देश में नौजवानों को तकनीकी, विज्ञान, टेक्नोलॉजी लौ के रूप में देश के अंदर बौद्धिक क्षमता निर्माण करने की धरती है। जहां पढ़ने वाला नौजवान, देश के अंदर और बाहर जहां भी जाता है, वहां उस देश के आर्थिक और सामाजिक जीवन में परिवर्तन करने में योगदान देता है। मुझे यह बताया

गया है कि यहां के एलुमिनी ने अलग-अलग स्थानों पर अपनी ऊर्जा और कमठता से अपना स्थान बनाया है।

मेरे विद्यार्थी साथियों एवं नौजवान साथियों, इस दुनिया के अंदर जब कभी भी कुछ बड़ा परिवर्तन हुआ है, उस परिवर्तन का वाहक हमेशा नौजवान ही रहा है। चाहे वह सामाजिक परिवर्तन हो, चाहे राजनीतिक परिवर्तन हो, चाहे विज्ञान का परिवर्तन हो, अध्यात्मिक या योग का परिवर्तन हो। जब भी नया परिवर्तन हुआ है, उस परिवर्तन का वाहक हमेशा नौजवान ही रहा है। हमारी आने वाली पीढ़ी अपनी बौद्धिक क्षमता से भारत के नवनिर्माण में अपना योगदान दे रही है, जिसके कारण हमें गर्व होता है कि हम उस धरती के वासी हैं, हम उस सभागार में बैठे हैं जिसका नाम स्वामी विवेकानंद जी के नाम से है।

चाहे सामाजिक परिवर्तन हो, चाहे राजनीतिक परिवर्तन हो, चाहे विज्ञान का परिवर्तन हो, चाहे टेक्नोलॉजी का परिवर्तन हो, चाहे आध्यात्मिक योग हो या विज्ञान हो, जब भी नया परिवर्तन हुआ है, उस परिवर्तन का वाहक हमेशा नौजवान रहा है। आने वाली पीढ़ी जिस कड़ी मेहनत और कठिन परिश्रम से अपनी बौद्धिक क्षमता से भारत के नव-निर्माण में योगदान दे रही है, इसके ऊपर हमें गर्व होता है कि हम उस धरती पर उस सभागार में बैठे हैं जो स्वामी विवेकानंद जी के नाम पर है। उन्होंने उस समय कहा था कि भारत विश्वगुरु बनेगा, भारत दुनिया का नेतृत्व करेगा। हमारे नौजवानों की बौद्धिक क्षमता के कारण, इनोवेशन के कारण, आत्मविश्वास के कारण, जुनून के कारण, कड़ी मेहनत के कारण, और आज हम यह सपना देख रहे हैं। इस सपने को पूरा हमें ही करना है। हमें अगली पीढ़ी का इंतजार नहीं करना है। यह सोचकर ही हमें संकल्प लेना है।

इस बार का विषय बहुत सही विषय है - लीडरशिप, डेमोक्रेसी और गवर्नेंस। जब लीडरशिप की बात आती है तो लोग राजनीतिक नेतृत्व के बारे में सोचते हैं। लीडरशिप राजनीतिक नेतृत्व नहीं है, लीडरशिप यानी हर कार्य में, हर क्षेत्र के अंदर, जहां भी, जिस कार्य स्थल पर काम कर रहे हैं, किस

तरीके से सामूहिकता के साथ, सबको साथ लेकर, सबके विचारों के आधार पर नेतृत्व देना है। हम में लीडरशिप की क्वालिटी सामाजिक, आर्थिक, व्यक्तिगत और आध्यात्मिक जीवन के अंदर होनी चाहिए। हम में नेतृत्व की क्षमता होनी चाहिए। हमारा प्रयास लगातार नेतृत्व की क्षमता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए होना चाहिए। नेतृत्व की क्षमता व्यक्ति के जीवन को नई दिशा देती है, नया परिवर्तन करती है और साध्य को प्राप्त करने के लिए साधन उपलब्ध कराती है। अच्छी डेमोक्रेसी होगी, अच्छा नेतृत्व होगा तो गवर्नेंस भी अच्छी होगी।

अगर किसी फैक्ट्री के अंदर, किसी स्कूल में, एजुकेशन में, सामाजिक क्षेत्र में, दुकान में, व्यापार में, अस्पताल में, राजनीति में कार्य स्थल पर अच्छी लीडरशिप होगी तो वहां गवर्नेंस अच्छी होगी, पारदर्शी होगी, जवाबदेह होगी, कार्यकुशलता बेहतर होगी। लीडरशिप के साथ गवर्नेंस जुड़ी है।

ये तीनों विषय जो रखे गए हैं, निश्चित रूप से इस पर एक लंबा संवाद हो सकता है, लंबी चर्चा हो सकती है। हमने देखा है कि किस तरीके से आजादी की लड़ाई लड़ी गई और आजादी की लड़ाई में किस तरह की लीडरशिप थी।

हमने आजादी की लड़ाई को जीता और उसके बाद 75 वर्ष की लोकतंत्र की यात्रा के अंदर, लोकतंत्र की शासन पद्धति के आधार पर बाबा साहब अंबेडकर और वरिष्ठ नेताओं द्वारा संविधान बनाया गया। संविधान के लिए बड़ा मंथन हुआ, बड़ी चर्चा हुई। जब आप संविधान की डिबेट पढ़ेंगे, चर्चा पढ़ेंगे तो आपको लगेगा कि संविधान के हर अनुच्छेद पर एक लंबी डिबेट हुई, लंबी चर्चा हुई। ये वे लोग थे जिन्होंने आजादी की लड़ाई लड़ी थी। उनका एक बड़ा चिंतन था। उन्होंने सारी दुनिया को समझा, वहां के संविधान को समझा और फिर संविधान को समझते हुए भारत की परिस्थिति, भौगोलिक, मानवीय संवेदना, समानता, न्याय, अभिव्यक्ति के अनुसार एक ऐसा संविधान बनाया जो आज हमारा मार्गदर्शक है। उस संविधान की मर्यादा को मानते हुए इस लोकतंत्र की 75 वर्ष की यात्रा में एक सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन करते हुए हम दुनिया में स्वाभिमान से कहने के लिए खड़े हैं कि आने

वाला समय भारत का होगा, भारत नेतृत्व करेगा, भारत विकसित राष्ट्र बनेगा। यही हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी का सपना है।

माननीय प्रधानमंत्री की लीडरशिप, नेतृत्व करने की क्षमता, एक लंबी सोच, एक लंबा चिंतन है कि देश को कहां ले जाना है। इस सोच से काम करने वाली लीडरशिप ने 15 अगस्त के दिन देश में संकल्प लिया कि हम सामूहिकता की ताकत के साथ भारत को विकसित राष्ट्र बनाएंगे और विकसित राष्ट्र बनाने में अगर किसी को योगदान होगा तो भारत के नौजवानों का होगा।

हमारी डेमोक्रेसी का पुराना इतिहास है। वैशाली से लेकर चोल राजा तक, अलग तरीके से हमारी संस्कृति, संस्कार, कार्यशैली और जीवनपद्धति में ही लोकतंत्र है। हमारी ग्राम सभाओं में जो भी निर्णय होते थे, सामूहिकता के साथ होते थे, मिलकर होते थे और यही डेमोक्रेसी है। उस निर्णय को सब लोग मानते थे। उसको किसी कानून से बाध्य नहीं किया जा सकता था। उसको लोकतंत्र पद्धति से बाध्य किया गया। इसलिए, हम कहते हैं कि हम 'मदर ऑफ डेमोक्रेसी' हैं। उस समय कानून नहीं मानने वालों पर कोई कानून लागू नहीं होता था। लेकिन, लोगों के मन में एक धारणा थी, विचार था कि जो भी निर्णय हुआ है वह सर्वसम्मति से हुआ है और सामूहिकता से हुआ है, इसलिए हमें मानना चाहिए। यह वैचारिक और सैद्धांतिक रूप से हमारी कल्चर में है। इसलिए, हम भारत को 'मदर ऑफ डेमोक्रेसी' कह सकते हैं। हम दुनिया में और जी-20 में भी बताएंगे कि भारत को 'मदर ऑफ डेमोक्रेसी' क्यों कहते हैं? हमारा यह संदेश जी-20 के माध्यम से दुनिया को जाएगा।

यह विश्वविद्यालय हमेशा लोकतंत्र, लोकतंत्र की पद्धति और लोकतंत्र की कार्यशैली के बारे में यूथ पार्लियामेंट और महिला पार्लियामेंट जैसे कार्यक्रम का आयोजन करता है। मुझे आशा है कि आप इस विश्वविद्यालय के माध्यम से पूरे देश के अंदर जाएंगे। यहां का नौजवान, विद्यार्थी, महिला विद्यार्थी देश के हर विश्वविद्यालय, कॉलेज और हर जिले के अंदर जाए। भारत 'मदर ऑफ डेमोक्रेसी' क्यों हैं? हमने जो भी रिसर्च किया है और अन्य लोगों ने जो रिसर्च किया है, वह सब हम आपको देंगे। भारत के

हर जन-जन, हर व्यक्ति और हर नौजवान के मन में यह भाव पैदा होना चाहिए कि मुझे अपने लिए नहीं अपने देश के लिए जीना है, मुझे अपने देश को विकसित भारत बनाना है, दुनिया में भारत को सबसे अग्रिम पंक्ति में लाना है, दुनिया के अंदर अगर कोई रिसर्च हो तो वह भारत में हो, कोई विज्ञान और टेक्नोलॉजी में परिवर्तन हो तो वह भारत में हो। हमारे योग विज्ञान पद्धति से दुनिया आज अच्छे स्वास्थ्य की ओर बढ़ रही है। हम चाहते हैं कि भारत इसी तरीके से हर क्षेत्र के अंदर नेतृत्व करे। हम अपने नौजवानों की बौद्धिक क्षमता, उनकी कार्यकुशलता, उनकी अद्भुत क्षमता और सामर्थ्य शक्ति के माध्यम से दुनिया के अंदर नेतृत्व करेंगे और दुनिया भी भारत की ओर देखेगी। यही हमारा लक्ष्य है। इसीलिए, आज हमारा आपके एमआईटी विश्व शांति विश्वविद्यालय में आना हुआ। यहां मुझे बहुत अच्छा लगा। यहां पर मुझे मन की शांति और तन की शांति मिली। आप बदलती हुई परिस्थिति में नौजवानों की क्या आवश्यकता है, उसके अनुसार नये-नये कोर्सेज चला रहे हैं। आज स्कूल ऑफ डिजाइन बिल्डिंग का भी उद्घाटन हुआ है।

मुझे आशा है कि आप हर विषय पर डिबेट और चर्चा करेंगे। डिबेट, संवाद और चर्चा के मंथन से जो अमृत निकलेगा, उस अमृत से देश का कल्याण हो और नौजवानों के जीवन में परिवर्तन आए। हम अपने नये आइडियाज और अनुभव को भी साझा करेंगे। हम सबके साथ सामंजस्य बनाकर और सबके साथ मिलकर अलग-अलग विश्वविद्यालय, कॉलेजों के अनुभव, उनके विचार, उनकी प्रैक्टिस, उनका इनोवेशन, उनका रिसर्च, जो कुछ भी किया है, उसको एक प्लेटफॉर्म पर लाने का प्रयास करें। हमारी सामूहिकता की जो भावना है, सबको साथ करने की और सबका कल्याण करने की जो हमारी भावना है, उससे हम जल्दी अपने लक्ष्य तक पहुंच जाएंगे। इसलिए, हमें एक-दूसरे से जुड़ना पड़ेगा। भारत के अलग-अलग गाँव, शहर, ढाणी, छोटे-छोटे कस्बों के अंदर नौजवानों की जो बौद्धिक और अद्भुत क्षमता है, उसमें जो नई सोच और चिंतन की क्षमता है, उस गाँव के नौजवान को भी

विश्वविद्यालय में रिसर्च और नया इनोवेशन करने मौका मिलना चाहिए, ताकि यह एक अच्छा प्लेटफॉर्म बन सके।

मैं पुनः आप सभी नौजवानों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। मुझे लगता है कि आप यहां जो सोचकर आए हैं और जिस लक्ष्य से आए हैं, वह लक्ष्य आपका पूरा होगा। हम कड़ी मेहनत और पूरी ऊर्जा के साथ अपनी आंतरिक चेतना को जागृत करते हुए अपने लक्ष्य को पूरा करेंगे और इस देश को ऊँचाई तक पहुंचाकर विश्वगुरु बनाने में भी योगदान देंगे।

-----